कठिन समय का भरोसाः जॉन

रीना दास

जॉन से मेरा संपर्क सन् 1976 से रहा है। उस वक्त मैं विश्वविद्यालय में पीचडी कर रही थी तथा जॉन व उनकी पत्नी फेथ ऐसे दो शिक्षकों की तलाश में थे जो उनके अपने बच्चों के लिए खोले जाने वाले स्कूल के लिए उपयुक्त हों। इसके लिए पहला चरण था कर्नाटक के नीलबाग में डेविड हॉर्सबरॉ द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करना। मैं उसमें शामिल हुई और प्रशिक्षण पूरा करने के बाद स्कूल की यह संकल्पना व विचार मुझे पसंद आया। स्कूल की शुरुआत हुई। जॉन ने हमेशा ही स्कूल व बच्चों को नई चीजों से परिचित करवाने में रुचि ली। उन्होंने हमारे बच्चों के साथ साइकिल पोलो की शुरुआत की, जंगली जानवर दिखाने के लिए उन्हें रणथंभौर लेकर गए। वे घने जंगल के बीच जानवरों द्वारा निकाले जाने वाली विभिन्न आवाजों के बारे में बताते, उनका मतलब समझाते और यह बताते कि बाघ अपना शिकार कैसे करते हैं।

वे ऐसे व्यक्ति थे जिनके पास अथाह ज्ञान व अनुभव था। राजनीति, फैशन, खेती, भोजन, वैगेनिज्म, मौसम, पानी, लोक-कला, सड़क सुरक्षा, मोटर साइकिल से लेकर पक्षियों तक आप किसी का भी नाम लीजिए उनके पास उसके बारे में जानकारी होती थी।

वे हमारे (दिगन्तर के) फाउंडर प्रैसिडेंट थे और जब भी कोई परेशानी सामने आई या किसी सलाह की जरूरत पड़ी, मैं उनसे मिली। वे अच्छे श्रोता व ''डिसीजन मेकर'' थे और उन्होंने सदा ही मेरी मदद की। वे मेरे लिए एक बड़ा सहारा थे। कई कठिन परिस्थितियों को आसान बना देने के लिए मैं उनकी आभारी हूं। उनका संस्था में रुचि लेना, छोटी-छोटी उपलब्धियों पर खुश हो जाना, संस्था के संचालन में पूरी आजादी देना, मैंने जो काम हाथ में लिया उसे लेकर मुझ में भरोसा जताना आदि ऐसी चीजें थीं जो मेरा संबल थीं और इसी वजह से चीजें आसान व सहज हो जाती थीं। इन्ही वजहों से मेरा आत्मविश्वास बढ़ा।

जॉन के साथ मेरा संपर्क स्कूल के काम की वजह से हुआ था किन्तु आगे चलकर वह सिर्फ उसी दायरे तक सीमित न रहा। सन् 1985 में वे मेरी शादी में शामिल हुए जिसमें मेरे अपने लोगों ने ही शामिल होने से मना कर दिया था। संकट के समय में मैं अक्सर उनसे मिलती रही हूं और सदा ही उन्होंने मुझे सही सलाह दी। कई बार बैठकर वे मुझे बस सुनते रहे और यह भरोसा दिलाते रहे कि मेरे पास उनका सहारा है। अब जब मैं पिछला समय याद करती हूं तो महसूस होता है कि वे हमेशा मेरे साथ थे और मुझे खुशी है कि मैं जॉन जैसे व्यक्ति से मिली जिन्होंने मुझे कई तरह से प्रभावित किया और अपने आस-पास की चीजों की सराहना करना सिखाया। ◆

भाषान्तरः प्रमोद पाठक

लेखिका परिचयः दिगन्तर की संस्थापक सदस्य हैं और वर्तमान में सचिव एवं निदेशक भी हैं।